ಕನ್ನಡ

ಸ್ವಯಂ ಬೋಧನೆ

कन्नड

स्वयं बोधिनी

अनुवादक :

एन. ज्ञानमूर्ति

ಕನ್ನಡ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪ್ರಾಧಿಕಾರ
ವಿಧಾನಸೌಧ, ಬೆಂಗಳೂರು

KANNADA : *A Self Instructional Course* by Lingadevaru Halemane
Published by : Kannada Development Authority, Govt. of Karnataka
Pages : xi+270

First Edition : 2017
ಪ್ರಥಮ ಮುದ್ರಣ : 2017

ಬೆಲೆ : 50-00 ರೂಪಾಯಿಗಳು
मूल्य : 50-00 *रुपये*

ಪ್ರಕಾಶಕರು :
ಕನ್ನಡ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪ್ರಾಧಿಕಾರ
ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ವಿಧಾನಸೌಧ, ಬೆಂಗಳೂರು

ಮುದ್ರಕರು :
ರತ್ನ ಆಫ್‌ಸೆಟ್ ಪ್ರಿಂಟರ್ಸ್
ಕಾವೇರಿ ನದಿ ರಸ್ತೆ, ಬೃಂದಾವನನಗರ,
ಬೆಂಗಳೂರು–560 050.
ಮೊ. : 9535178456

अध्यक्ष महोदय के दो शब्द ... ...

इस समय कन्नड़ भाषा के महत्व को कर्नाटक में दिखाने की आवश्यकता है। कर्नाटक राज्य में विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोलने वाले लोग बड़ी संख्या में रह रहे हैं। हम उन्हें कन्नड़िगा मानते हैं क्योंकि वे कर्नाटक में रह रहे हैं। हम उनकी मातृभाषा से द्वेष नहीं करते हैं, बल्कि बदले में हमने उनको प्यार और स्नेह दिया है। इन लोगों को स्थानीय लोगों से मिलना होता है, क्योंकि वे इस राज्य की शरण में रहते हैं और वे रोज़गार, आश्रय, जीविका, इत्यादि का आनंद उठा रहे हैं, उनको दिल से स्थानीय भाषा को सीखनी चाहिए और उसको उपयोग में लाना चाहिए। हमारी इच्छा है कि उनको कन्नड़ भाषा सीखनी चाहिए और लोगों के साथ घुलता-मिलता चाहिए तथा खुशी के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए। यह पुस्तक इस नजरिये से कन्नड़ सीखने में बहुत मदद करती है। इस पुस्तक की सहायता से कोई भी आसानी से लोगों के साथ संवाद कर सकता है। कन्नड़ भाषा सीख कर कोई भी कन्नड़िगा बन सकता है। कन्नड़ संस्कृति के परिचय से स्थानीय लोगों के साथ अच्छे संबंध बन सकते हैं। हर व्यक्ति को उस राज्य की भाषा सीखनी चाहिए जिसमें वह रह रहा है, नहीं तो हमारी भाषायें अलग होगी और हमारे बीच मतभेद होंगे। इन मतभेदों को दूर करने के लिए व्यापक दृष्टिकोण रखते हुए इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। सभी को इस अवसर पर प्रो. लिंगदेवरु हलेमने को याद करना चाहिए। उनके प्रयत्नों से ही इस पुस्तक को पुनरीक्षण के पश्चात् तेलगू, मलयालम, मराठी भाषाओं में डॉ. नंजन्डन, प्रो. मोहन कुमार और प्रो. डी.एस. चौगले ने क्रमशः अनुवादित किया है। प्राधिकरण इन सभी लेखकों का आभारी है।

इस पुस्तक का प्रकाशन तत्कालीन प्रो. बरगूर रामचंद्रप्पा ने शुरु किया था बाद में उस समय के अध्यक्ष, श्री इदिनब्बा, डॉ. मुख्यमंत्री चंद्रू प्राधिकरण सचिव , डॉ. के. मुरलीधर ने इस भाषा को आगे बढ़ाया। सभी स्टॉफ सदस्यों का एवं मुद्रण कार्य के लोगों का मैं आभारी हूँ।

डॉ० एल. हनुमंतय्या
अध्यक्ष

दिनांक : 01.01.2016

भूमिका

स्वाध्याय द्वारा भाषा सीखने की कला का यह एक प्रयास है। हिन्दी भाषा–भाषी जो कन्नड़ सीखना चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

आशा और विश्वास है कि स्व–अध्ययन द्वारा हिन्दी भाषा–भाषी इस पुस्तक से कन्नड़ सीख सकेंगे। कम से कम वे टूटी–फूटी कन्नड़ से ही सही स्थानीय कन्नडिगाओं से वार्तालाप कर सकेंगे। वार्तालाप के साथ–साथ कन्नड़ भाषा लिखना और पढ़ना सीखने में भी यह पुस्तक सहायक होगी।

जितनी हो सके, सही तरतीब द्वारा भाषा सीखने का यह एक सद्प्रयास है। भाषा सीखने में जो भी विश्व–मान्य सही सिद्धान्त हैं, वे यहाँ प्रयुक्त हुए हैं। सरल सीधे सिद्धांतों से लेकर जटिल व पेचीदे तरीके भी अपनाये गये हैं। संवाद के माध्यम से भाषांतरण सिद्धांत अपनाया गया है। भाषा की बनावट और ढांचे में अनौपचारिक ढंग से संवाद करने का शैक्षणिक तरीका प्रस्तुत हुआ है।

पुस्तक को दो भागों में बांटा गया है। पहले भाग में बोलने का तरीका सिखाया गया है। दूसरे भाग में लिपि सिखाने का प्रयास किया गया है। पहले भाग में 25 पाठ हैं– जिनमें भाषा के ढांचे को प्रगतिशील तरीके से प्रस्तुत किया गया है। जो भाषा सिखायी गयी है वह बेंगलूरू व मैसूरू में बोली जाने वाली भाषा है, जो कि लिखित भाषा से थोड़ी अलग है।

हर पाठ के पांच मूलभूत सिद्धांत हैं– (1) संवाद, (2) संरचना (3) नौसिखियों के लिए कुंजी (4) अभ्यास और (5) शब्दावली।

हर परिस्थिति में बातचीत करने की शैली व शब्दावली का समुचित प्रयोग हुआ है। अधिकांश पृष्ठों में संवाद करने का एक तरीका बतलाया गया

है जो कि नौसिखियों के लिए सरल व सदुपयोगी है। संवाद–परिसंवाद के माध्यम से नौसिखिया नई भाषा जल्दी सीख जाता है।

पाठकों को इस पाठ्यक्रम से कर्नाटक की सभ्यता व संस्कृति का भी ज्ञान होता जाता है। पहले के दस पाठ देवनागरी लिपि में दिये गये हैं– ताकि उत्तर व पश्चिम भारत के अधिकांश लोग समझ सकें। उसके बाद के पाठ कन्नड़ लिपि में दिये गये हैं– जब अनुभव से तब तक नौसिखियों की लिपि के प्रति अभिरूचि जागृत हो जाएगी।

अभ्यास व कवायद भी संग–संग दिये गये हैं ताकि भाषा की बनावट से नौसिखिया वाकिफ होता चला जाए। अभ्यास करते करते सीखें तो भाषा के प्रति अभिरुचि स्थापित हो जाती है। हर अभ्यास व कवायद में वही कराया गया है, जो पहले सिखाया गया हो। शब्दावली वर्णमाला के अनुसार दी गयी है– जो कि देवनागरी वर्णमाला से बहुत हद तक मिलती–जुलती है।

जहाँ तक हो सके व्याकरण सम्बन्धी दुरूहता से नौखिखियों को बचाकर रखा गया है। पर हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि जानने वालों को कन्नड़ सीखने में सरलता होती है, क्योंकि जो नियम हिन्दी में हैं, वे ही लगभग कन्नड़ में भी हैं। अक्षरों की परस्पर संधि भी हिन्दी की तरह ही है।

दूसरे भाग में लिपि सिखाई गई है। देवनागरी की वर्णमाला से मिलती–जुलती ही कन्नड़ वर्णमाला है। इसलिए हिंदी भाषा–भाषियों के लिए यह सोने में सुहागा है। स्वर व व्यंजन भी समान ही हैं और संयुक्ताक्षर भी। उम्मीद है कि नौसिखिये बोलचाल की भाषा सीखने के संग–संग लिखने व पढ़ने का भी सामान्य ज्ञान हासिल कर सकेंगे।

यह भूमिका मार्गदर्शन व अभिप्रेरणा के रूप में दी गई है। सही प्रेरणा तो सीखने वाले की अपनी निजी जिज्ञासा व जरूरतों पर निर्भर है। नई भाषा सीखना एक पाठ्यक्रम की तरह नहीं होना चाहिए। वरना इसे अपने शौक के रूप में ढालना चाहिए। शब्दावली का हर शब्द, लिपि का हर अक्षर सीखने के लिए एक खिलौने जैसे होना चाहिए और उसमें अभिरूचि एक बालक की तरह होनी चाहिए। नौसिखिये को खुले दिमाग और शौक से नई भाषा सीखनी चाहिए, सर पर एक बोझ की तरह नहीं।

बोलचाल में स्वच्छंद व निडरता से बात करनी चाहिए। गल्तियाँ निषिद्ध नहीं हैं। गलतियों के प्रति लापरवाही न होकर, स्वच्छन्दता व निर्भीकता होनी चाहिए। सामने वाला अगर नुक्ताचीनी करता हो, हँसी–ठट्ठा करता हो तो उसके प्रति अन्यमनस्क होना चाहिए। अगर व गल्तियां सुधारता हो, तो उसे करने देना चाहिए। गलतियाँ करते–करते व गलतियाँ सुधारते–सुधारते ही भाषा सीखी जा सकती है।

मैं कन्नड़ प्रगति प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्षों का आभारी हूँ, जिनकी बदौलत यह पुस्तक प्रकाशित हुई है। मैं देवनागरी व हिन्दी अनुवाद के लिए श्री एन. ज्ञानमूर्तिजी का आभारी हूँ, जिनकी हिन्दी में क्षमता व कन्नड़ में अभिरुचि इस योगदान के लिए उत्तरदायी है।

PREFACE

It is our aim that all those living in Karnataka should learn the Kannada language. Every individual of this land should respect the language and the culture of this land, which is the stand of this Kannada Development Authority. In this direction, along with the projects formulated by the administrative machinery, the Authority through the efforts of teaching the language of the land i.e., Kannada to the Non-Kannadigas, it has stepped forward with broad objectives of creating an environment of harmonious living.

This is a unique programme of bringing awareness about the Kannada language and culture by preparing books of easy lessons pertaining to Kannada teaching by establishing Kannada Learning Centres in places where people who don't speak Kannada language are living. The Authority has already brought out such literature in English, Telugu, Tamil, Hindi, Malyalam and Marathi languages. Prof. Lingadevaru Halemane, Dr. Mohan, Prof. Nanjundan, Prof. Mohan Kuntar, Prof. Ougale and Prof. N. Gnana Murthy are the backbone of the efforts of the authority in this venture. The Authority acknowledges the contributions of these people. This publication is in its fifth printing which is a testimony of the success of this effort. The credit of this success also goes to all the past Presidents and the present President of this Authority Prof. S.G. Siddaramaiah.

Dr. K. Muralidhar
Secretary

ಮೊದಲ ಮಾತು

ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರೂ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ಕಲಿಯಲೇ ಬೇಕೆನ್ನುವುದು ಕನ್ನಡ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪ್ರಾಧಿಕಾರದ ಘೋಷವಾಕ್ಯ. ಈ ನಾಡಿನ ನೀರು–ನೆಲದ ಋಣದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರತಿ ವ್ಯಕ್ತಿಯೂ ಇಲ್ಲಿನ ಭಾಷೆ–ಸಂಸ್ಕೃತಿಯನ್ನು ಗೌರವಿಸಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ ಎನ್ನುವುದು ಪ್ರಾಧಿಕಾರದ ನಿಲುವು. ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಆಡಳಿತ ಯಂತ್ರಗಳು ರೂಪಿಸುವ ಯೋಜನೆಗಳ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಕನ್ನಡ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಪ್ರಾಧಿಕಾರ ನಾಡ ಭಾಷೆಯನ್ನು ಕನ್ನಡೇತರರಿಗೂ ಕಲಿಸುವ ಪ್ರಯತ್ನದ ಮೂಲಕ ಸಾಮರಸ್ಯದ ವಾತಾವರಣವೊಂದನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವ ಬಗ್ಗೆ ವಿಶಾಲ ಧ್ಯೇಯವುಳ್ಳ ಮಹತ್ವದ ಹೆಜ್ಜೆಯಿಟ್ಟಿದೆ.

ಕನ್ನಡೇತರರು ವಾಸಿಸುವ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ಕಲಿಕಾ ಕೇಂದ್ರಗಳನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಿ ಅವರುಗಳಿಗೆ ಕನ್ನಡ ಬೋಧಿಸುವ ಕುರಿತಾದ ಸುಲಭ ಪಠ್ಯಗಳನ್ನು ರೂಪಿಸಿ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಅರಿವು ಮೂಡಿಸುವ ವಿಶಿಷ್ಟ ಅಭಿಯಾನ ಇದು. ಇಂಗ್ಲೀಷ್, ತೆಲುಗು, ತಮಿಳು, ಹಿಂದಿ, ಮಲೆಯಾಳಂ ಮತ್ತು ಮರಾಠಿ ಭಾಷೆಗಳಲ್ಲಿ ಈಗಾಗಲೇ ಕೃತಿಗಳನ್ನು ಪ್ರಾಧಿಕಾರ ಹೊರತಂದಿದೆ. ಪ್ರೊ. ಲಿಂಗದೇವರು ಹಳೆಮನೆ, ಡಾ. ಮೋಹನ್, ಪ್ರೊ. ನಂಜುಂಡನ್, ಪ್ರೊ. ಮೋಹನ್ ಕುಂಟಾರ್, ಪ್ರೊ. ಔಗಲೆ ಮತ್ತು ಪ್ರೊ. ಎನ್. ಜ್ಞಾನಮೂರ್ತಿ–ಇವರೆಲ್ಲರೂ ಪ್ರಾಧಿಕಾರದ ಈ ಪ್ರಯತ್ನಕ್ಕೆ ಬೆನ್ನೆಲುಬಾಗಿ ನಿಂತಿರುವವರು. ಪ್ರಾಧಿಕಾರದ ಕೃತಜ್ಞತೆಗಳು ಇವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಸಲ್ಲುತ್ತದೆ. ಪ್ರಾಧಿಕಾರದ ಈ ಪ್ರಕಟಣೆ ಈಗ ಐದನೇ ಮುದ್ರಣ ಕಾಣುತ್ತಿದೆಯೆಂದರೆ ಈ ಪ್ರಯತ್ನದ ಯಶಸ್ಸನ್ನು ಊಹಿಸಬಹುದು. ಈ ಪ್ರಯತ್ನಗಳಿಗೆ ಬೆನ್ನುತಟ್ಟಿರುವ ಪ್ರಾಧಿಕಾರದ ಎಲ್ಲಾ ಹಿಂದಿನ ಅಧ್ಯಕ್ಷರುಗಳಿಗೆ ಹಾಗೂ ಪ್ರಸ್ತುತ ಅಧ್ಯಕ್ಷರಾಗಿರುವ ಪ್ರೊ. ಎಸ್.ಜಿ. ಸಿದ್ಧರಾಮಯ್ಯನವರಿಗೆ ಗೌರವಗಳು ಸಲ್ಲುತ್ತದೆ.

ಡಾ. ಕೆ. ಮುರಳಿಧರ
ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ

पहली बात

कर्नाटक में रहने वाले हर एक व्यक्ति को कन्नड़ भाषा सीखनी ही होगी यह कन्नड़ अभिवृद्धि प्राधिकार का ध्येय वाक्य है। इस स्थान के जल तथा अन्न के ऋणि सभी व्यक्तियों को यहाँ की भाषा तथा संस्कृति को गौरव देना चाहिए यह इस प्राधिकार का उद्देश्य है। इस दिशा में अधिकारिक क्षेत्रों में रूपरेखात्मक योजनाओं के साथ स्थलीय भाषा को अकन्नड़भाषी लोगों को सिखाकर समरसतापूर्ण वातावरण का निर्माण करने के ध्येय को लेकर कन्नड़ अभिवृद्धि प्राधिकार का यह एक महान कदम है।

अकन्नड़भाषी लोगों के निवास स्थलों के निकट कन्नड़ शिक्षण केंद्रों को स्थापित कर उन्हें कन्नड़ सिखाने हेतु सरल रीतियों को रूपान्वित कर कन्नड़ भाषा तथा संस्कृति संबंधित चेतना जागृत करने का यह एक विशिष्ट अभियान है। अंग्रेजी, तेलुगु, तमिल, हिन्दी, मलयालम, मराठी भाषाओं में प्राधिकार द्वारा पहले ही कृति उपलब्ध है। प्रो. लिंगदेवरु हलेमने, डॉ. मोहन, प्रो. नंजुंडन, प्रो. मोहन कुंटार, प्रो. औगले, प्रो. एन. ज्ञानमूर्ति - ये सभी प्राधिकार के आधार स्तंभ है। प्राधिकार इन सभी के प्रति कृतज्ञ है।

प्राधिकार की यह प्रति अपना पाँचवां मुद्रण प्राप्त कर चुकी है, जिससे इस प्रयत्न की सफलता का अंदाजा लगाया जा सकता है। इस प्रयत्न को अपना पूरा सहयोग देने वाले प्राधिकार के सभी पिछले अध्यक्षों को तथा वर्तमान अध्यक्ष प्रो. एस.जी. सिद्धरामय्या को गौरव प्रदान किया जाता है।

डॉ. के. मुरलीधर
सचिव

विषय सूची

परिचय – – V-VIII

संक्षेपण – –

प्रतिलेखन के मूल सिद्धांत – –

भाग - I

अध्याय 1

व्यक्ति वाचक सर्वनाम एवं उनके संबंधवाचक भेद – 1-7

अध्याय 2

व्यक्तिवाचक सर्वनाम एवं उनके संबंधवाचक भेद – 8-18
हाँ / नहीं प्रकार के प्रश्नवाचक वाक्य

अध्याय 3

संज्ञाओं के संबंधवाचक भेद – – 19-27

अध्याय 4

गुणवाचक व परिभाषा वाचक विशेषण – – 28-34

अध्याय 5

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के विधेयात्मक भेद / विशेषणात्मक संज्ञा, – 35-46
अल्ली, अधिकरण एवं प्रत्यय कारक

अध्याय 6

संप्रदाय कारक, संख्यात्मक – – 47-58

अध्याय 7

संख्यावाचक विशेषण, मानव बहुवचन मानवीय संख्याएं – 59-69

अध्याय 8

रंगात्मक विशेषण, मानक क्रियाएं और निषेध – 70-78

अध्याय 9

क्रिया इरु : नान पोस्ट काल, प्रतिमात और निषेध – 79-86

अध्याय 10

क्रियाओं के आज्ञार्थ, उपदेशात्मक, अनुमोदनात्मक भेद / – 87-97
मुख्य क्रियाओं के गैर पोस्ट काल अन्नू कर्मकारक

अध्याय 11

इन्ता तुलनात्मक, निश्चयात्मक अनुज्ञात्मक एवं चिन्हक (चिह्नक) – 98-105
निषेधात्मक भेद

अध्याय 12

क्रियावाचक, सम्भावित भेद, इन्दा करणकारक एवं अपादात कारक – 106-116

अध्याय 13

इसू क्रिया रूपांतरण एवं प्रयोजनमूलक के उपमे इसू का प्रयोग, – 117-126
निजवाचक सर्वनाम

अध्याय 14

भूतकाल में द और निषेधात्मक में त का प्रयोग – 127-139

अध्याय 15

भूतकाल में के, टी, डी, इद एवं उनके निषेध, अप्रयक्ष कृणत विवरणात्मक भेद 140-152

अध्याय 16

भूतकालिक कृदंत एवं उनके निषेध भेद – 153-164

अध्याय 17
निरन्तर (सतत) और उनके निषेध रूप – 165-173

अध्याय 18
पूर्णकालिक और उनके निषेध रूप – 174-182

अध्याय 19
सम्बन्धवाचक कृदन्त, संज्ञा और उनके निषेधात्मक कृदन्त – 183-203

अध्याय 20
साधारण प्रतिबंधित और उनके निषेधात्मक – 204-211

अध्याय 21
अपूर्ण भूतकाल प्रतिबंधित और उनके निषेधात्मक रियायती रूप – 212-220

अध्याय 22
ಕರ್ನಾಟಕ *(अध्ययन अभ्यास)* – 221-229

अध्याय 23
ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ *(अध्ययन अभ्यास)* – 230-235

अध्याय 24
ಮಾನ ತರುವ ಸಂಗತಿ ಅಲ್ಲ *(अध्ययन अभ्यास)* – 236-239

अध्याय 25
ಬೇಕು ಬೇಡಗಳು *(अध्ययन अभ्यास)* – 240-244

भाग - 2
कन्नड़ लिपि – 245-270

पाठ – 1

1. संवाद

मनोहर : नमस्कारा, सार !	नमस्ते, जी !
महादेव : नमस्कारा ! नीवु यारू ? (सम्मानसूचक)	नमस्ते, आप कौन हैं?
मनोहर : नानु कन्नडदा विद्यार्थी.	मैं कन्नड़ का विद्यार्थी हूँ।
महादेव : निम्मा हेसरू एनु? (सम्मानसूचक)	आपका नाम क्या है?
मनोहर : नन्ना हेसरू मनोहर, नीवु यारू सार?	मेरा नाम मनोहर है। आप नीवु कौन हैं, महोदय?
महादेव : नानु कन्नडा अध्यापका.	मैं कन्नड़ का अध्यापक हूँ।
मनोहर : निम्मा हेसरू एनु सार? जी?	महोदय, आपका नाम क्या है
महादेव : नन्ना हेसरू महादेवा, निम्मा राज्या यावदु?	मेरा नाम महादेव है। आपका प्रदेश कौन सा है?
मनोहर : नन्ना राज्या तमिलनाडु.	मेरा प्रदेश तमिलनाडु है।
महादेव : निम्मा मात्रुभाषे यावदु? है?	आपकी मातृभाषा कौन सी
मनोहर : नन्ना मात्रुभाषे तमिलु. इवरू यारू सार?	मेरी मातृभाषा तमिल है। ये कौन हैं, महोदय?
महादेव : इवरू कन्नडा अध्यापकी.	ये कन्नड़ की अध्यापिका है।

मनोहर : इवरा हेसरू एनु, सर?	इनका नाम क्या है?
महादेव : इवरा हेसरू शीला.	इनका नाम शीला है।
अवरू यारू, मनोहर?	मनोहर, वे कौन हैं? (सम्मानसूचक)
मनोहर : अवरू राबर्ट, नन्ना स्नेहिता.	वे राबर्ट है, मेरा मित्र है।

2. कवायद

2.1	नीवु यारू?	आप कौन हैं? (सम्मानजनक)
	अवरू यारू?	वे कौन हैं? (सम्मानजनक, दूरस्थ)
	इवरू यारू?	ये कौन हैं? (सम्मानसूचक, समीपस्थ)
2.2	नानु अध्यापका.	मैं अध्यापक हूँ।
	अवरू वैद्या.	वे डॉक्टर हैं।
	इवरू गुमास्ता.	ये क्लर्क हैं।
	अवरू लेखकी.	वे लेखिका हैं।
	अवरू इंजीनियर.	वे इंजीनियर हैं।
	नानु व्यापारी.	मैं व्यापारी हूँ।
2.3	निम्मा हेसरू एनु ?	आपका नाम क्या है? (सम्मानसूचक)
	अवरू हेसरू एनु ?	उनका नाम क्या है? (सम्मानसूचक, दूरस्थ)
	इवरा हेसरू एनु ?	इनका नाम क्या है? (सम्मानसूचक, समीपस्थ)
2.4	नन्ना हेसरू मोहन	मेरा नाम मोहन है।
	अवरा हेसरू कमला	उनका नाम कमला है।
	इवरा हेसरू राजू	इनका नाम राजू है। (सम्मानजनक, समीपस्थ)
2.5	इवरा ऊरू यावुदु? (सम्मानजनक, समीपस्थ)	इनका कौन सा गाँव है?
	इवरा राज्य यावुदु? (समीपस्थ)	इनका प्रदेश कौन सा है?
	निम्मा जिले यावुदु?	आपका जिला कौन सा है?
2.6	नम्मा देशा भारता	मेरा देश भारतवर्ष है।
	नन्ना राज्या कर्नाटका।	मेरा राज्य कर्नाटक है।
	इवरा जिल्ले तुमकूर	इनका जिला तुमकूर है। (समीपस्थ)
2.7	अवरू नम्मा स्नेहिता	वे मेरे मित्र हैं। (सम्मानजनक, दूरस्थ)
	अवरू नन्ना स्नेहिते	वे मेरी सहेली हैं। (सम्मानजनक, दूरस्थ)

3. नौसिखियों के लिए :

3.1 'नमस्कारा' अभिवादन का एक तरीका है, जब लोग आपस में मिलते हैं।

3.2 यह पाठ साधारण वाक्य सिखाता है– जिनमें संज्ञाएं प्रधान हैं।

3.3 नोट करें– कन्नड़ में सजीव व निर्जीव के लिए अलग–अलग शब्दों का प्रयोग होता है। 'यारू' प्रश्नवाचक शब्द है, जिसका प्रयोग सजीव लोगों के लिए किया जाता है। निर्जीव वस्तुओं के लिए 'एनु' प्रश्नवाचक शब्द है।

नीवु यारू ?	आप कौन हैं?
निम्मा हेसरू एनु?	आपका नाम क्या है?

3.4

नानु	मैं
नीवू	आप (सम्मानजनक, बहुवचन)
अवरू	वे (सम्मानजनक, दूरस्थ, बहुवचन)
इवरू	ये (सम्मानजनक, समीपस्थ, बहुवचन)

3.5 'आ' कार लगाकर सम्बन्धवाचक सर्वनाम बन जाता है।

नानु+आ = नन्ना	मेरा
नीवु+आ = निम्मा	आपका
अवरू+आ = अवरा	उनका
इवरू+आ = इवरा	इनका

3.6 यावदु ? कौन सा? यारू ? कौन ? प्रश्नवाचक सर्वनाम है।

4. अभ्यास

4.1 कन्नड़ रूपान्तर करके रिक्त स्थान भरो।

4.1.1 राजा नन्ना..... (मित्र)

4.1.2 अवरा .....तमिलु (मातृभाषा)

4.1.3 .....हेसरू कमला (मेरा)

4.1.4 अवरा राज्य.....(कौन सा?)

4.2 रिक्त स्थान भरो।

4.2.1 निम्मा हेसरू .....?

4.2.2 अवरा हेसरू .....?

4.2.3 नीवु.....

4.2.4 इवरा कन्नड.....

4.3 अगर नावु– नन्ना हो जाता है, तो ये क्या होंगे?

4.3.1 नीवु

4.3.2 अवरा

4.3.3 इवरू

4.4 इन शब्दों से वाक्य बनाओ।

4.4.1 अध्यापकी

4.4.2 राज्य

4.4.3 हेसरू

4.4.4 नानु

4.5 इनका कन्नड़ में अनुवाद करो।

4.5.1 मैं कन्नड का एक विद्यार्थी हूँ।

4.5.2 गोपाल मेरा मित्र है।

4.5.3 मेरा प्रदेश केरल है।

4.5.4 उनका नाम जया है।

4.6 इनका कन्नड़ में जवाब दो।

4.6.1 नीवु यारू?

4.6.2 निम्मा हेसरू एनु?

4.6.3 निम्मा देश यावुदु?

4.6.4 निम्मा राज्य यावुदु?

4.6.5 निम्मा जिल्ले यावुदु?

4.6.6 निम्मा ऊरु यावुदु?

4.6.7 निम्मा मात्रुभाषे यावुदु?

5. शब्द संग्रह

अध्यापका–	अध्यापक (पुल्लिंग)
अध्यापकी–	अध्यापिका (स्त्रीलिंग)
अवरा–	उनका (दूरस्थ)
इवरा–	इनका (समीपस्थ)
ऐनु–	क्या
नन्ना–	मेरा
नमस्कारा–	नमस्ते
नानु–	मैं
निम्मा–	आपका (सम्मानसूचक)
नीवु–	आप (सम्मानसूचक)
मात्रुभाषे–	मातृभाषा
यारू–	कौन
यावुदु–	कौन सा
राज्य–	प्रदेश
विद्यार्थी–	विद्यार्थी
स्नेहिता–	मित्र (पुल्लिंग)
स्नेहिते–	सहेली (स्त्रीलिंग)
हेसरू–	नाम

5.2 अन्य शब्दावली

गुमास्ता – क्लर्क

जिल्ले – जिला

देशा – देश

लेखकी – लेखिका (स्त्रीलिंग)

वैद्य – वैद्य, डाक्टर

व्यापारी – व्यापारी

स्नेहिते – सहेली (स्त्रीलिंग)